

हफ्तावार रिसाला : 386  
Weekly Booklet : 386

Buzurgane Deen Ke 40 Aqwal (Hindi)

# बुज़ुर्गाने दीन के 40 अक्वाल

सफ़हात 40

अमीरे अहले सुन्नत وآئمة البركة العلية के मुबारक  
कलम से तहरीर किये गए



मजारे मुबारक हज़रत हसन बसरी رحمة الله عليه



मजारे मुबारक हज़रत बिशरे हाफ़ी رحمة الله عليه



मजारे मुबारक सय्यिद अहमद कबीर रिफ़ाई رحمة الله عليه



मजारे मुबारक शेख़ अब्दुल हाक़ मुहद्दिसे देहलवी رحمة الله عليه

पेशकश :

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया  
(दावते इस्लामी इन्डिया)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना

अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरी रजवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ पढ़ लीजिये ان شاء الله जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَاَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

(مستطرف، 40/1)

तरजमा : ऐ अल्लाह पाक ! हम पर इल्मो हिकमत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले ।

नोट : अब्बल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

तालिबे ग़मे मदीना

व बकीअ व मफ़िरत

13 शब्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



### ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ( दा'वते इस्लामी इन्डिया )

येह रिसाला “बुजुर्गाने दीन के 40 अक्वाल”

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने उर्दू ज़बान में मुरत्तब किया है ।  
ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और  
मक्तबतुल मदीना से शाएअ करवाया है ।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लती पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को  
(ब ज़रीअए WhatsApp, Email या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

### राबिता : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बगीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात ।

MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ  
 آمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## बुजुर्गाने दीन के 40 अक्वाल

**दुआए अमीरे अहले सुन्नत :** या अल्लाह पाक ! जो कोई 40 सफ़हात का रिसाला : “बुजुर्गाने दीन के 40 अक्वाल” पढ़ या सुन ले उसे औलियाए किराम की सच्ची महबूबत दे और उस को मां बाप समेत जन्नतुल फ़िरदौस में बे हिसाब दाख़िला नसीब फ़रमा ।  
 اٰمِيْنَ بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

### पहले इसे पढ़िये

औलियाए किराम और सूफ़ियाए किराम (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) अल्लाह पाक के बड़े ही मक्बूल बन्दे हैं । अल्लाह पाक इन को इल्मे लदुन्नी (या'नी अपनी तरफ़ से, बिगैर किताबें पढ़े इल्म) इनायत फ़रमाता है । अक्कीदत और अदब से इन की सोहबत में बैठने वाला बद बख़्त नहीं रहता बल्कि इन हस्तियों की नज़रे करम पल भर में “गुनहगार” को राहे सुन्नत पर चला देती है । औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم अपनी सबक़ आमोज़ नसीहतों और सुन्नतों भरे किरदार से नेकी की दा'वत देते और लोगों को मुक़रबीने बारगाहे इलाही (या'नी अल्लाह पाक के करीब) करते हैं । इस मुख़्तसर किताब में अल्लाह वालों के मुख़्तलिफ़ 40 अक्वाल जम्अ किये गए हैं और येह 40 अक्वाल एक “अल्लाह वाले” अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी हज़रते अल्लामा मौलाना मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने तहरीर फ़रमाए हैं । अल मदीनतुल इल्मिय्या का शो'बा “हफ़तावार रिसाला मुतालअ” मुख़्तलिफ़ मवाक़ेअ पर अमीरे अहले सुन्नत के क़लम से लिखे हुए इन अक्वाले बुजुर्गाने दीन को तरतीब दे कर एक किताब की सूरत में पेश कर रहा है । अक्सर मक़ामात पर कौल की मुनासबत से उन बुजुर्ग की मुख़्तसर सीरत भी बयान की गई है ताकि पढ़ने वाले को उन बुजुर्ग رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم का तआरुफ़ हो । अल्लाह पाक इस किताब पर काम करने वालों की कोशिशों को क़बूल फ़रमाए और इसे उन के लिये बे हिसाब बख़्शिश का ज़रीअ बनाए ।

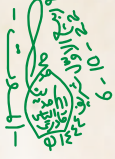
अल्लाह पाक अमीरे अहले सुन्नत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم को दराजिये उम्र बिलख़ैर अता फ़रमाए और इन का साया ख़ैरो आफ़ियत के साथ हम पर दराज़ फ़रमाए ।  
 اٰمِيْنَ بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

तालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ व बे हिसाब मग़फ़रत  
 عُنَى عَنْهُ تَاهِر अत्तारी मदनी



الله

## ज़िल्लतो ग़म



فرمانِ لُقْمَانَ: "اے میرے بیٹے! قرض سے بچنا کیوں کہ یہ دن کی ذلت اور رات کا غم ہے۔"

فرमानے لुकمان عليه السلام: "ऐ मेरे बेटे! कर्ज़ से बचना क्यूं कि येह दिन की ज़िल्लत और रात का ग़म है।" (तफ़्सीर दर मुत्थूर، 6/520)



हज़रते लुकमान हकीम عليه السلام अल्लाह पाक के वली हैं, आप ने एक हज़ार साल उमर पाई। हज़रते दावूद عليه السلام से पहले आप "बनी इसराईल" के मुफ़ती थे। जब हज़रते दावूद عليه السلام मन्सबे नुबुव्वत पर फ़ाइज़ हो गए तो आप ने फ़तवा देना छोड़ दिया। आप عليه السلام ने चार हज़ार अम्बियाए किराम عليه السلام की खिदमत में हाज़िरी दी है। (अज़ाइबुल कुरआन, स. 358) اوصین بجا اخاتم النبیین صلی الله علیه و آله وسلم | ا





اللّٰهُ

## دुनिया کی موسیبتوں

تابعی بررس حضرت سیدنا کعب الأخبار رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

”جو شخص موت کو پہچان لیتا ہے اُس پر دنیا کی مصیبتیں اور غم ہلکے ہو جاتے ہیں۔“



صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْبِ  
صَلِّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ

تاہےई بوجرگ ہجرتے سزیددنا کا'بول اہبار رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرماتے ہیں: ”جو شخص موت کو پہچان لیتا ہے اس پر دنیا کی موسیبتوں اور غم ہلکے ہو جاتے ہیں۔“ (احیاء العلوم، 5/194)



دُنْیَا كے غَم

دُنْیَا كے مُسِیْبَتوں

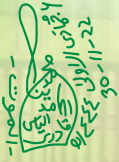


ﷻ

## उलमा की बादशाहों पर हुकूमत

حضرت ابو اسود رضی اللہ عنہ فماتے ہیں: "علم سے بڑھ کر عزت والی چیز کوئی نہیں،  
بادشاہ لوگوں پر حکومت کرتے ہیں جبکہ علماء بادشاہوں پر حکومت کرتے ہیں۔"

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ صَلَّى اللهُ عَلَيَّ مُحَمَّدٍ



हजरते अबू अस्वद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرماتے हैं :

“इल्म से बढ़ कर इज्जत वाली चीज़ कोई नहीं, बादशाह लोगों पर  
हुकूमत करते हैं जब कि उलमा बादशाहों पर हुकूमत करते हैं।”

(احیاء العلوم، 1/22)



हजरते अबू अस्वद दुऊली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अजीम ताबेई बुजुर्ग हैं। मुसलमानों के चौथे खलीफ़ा हजरते मौला अली رَضِيَ اللهُ عَنْهُ ने जब लोगों को अरबी बोलचाल में ग़लतियां करते पाया तो इस्लाह के लिये बुन्यादी क़वाइद मुरतब किये और हजरते अबू अस्वद दुऊली को कलिमे की तीनों किस्मों “इस्म, फ़े’ल, हर्फ़” की ता’रीफ़ें लिख कर दीं और इस में इज़ाफ़ा करने का फ़रमाया फिर उन के इज़ाफ़ा जात की इस्लाह भी फ़रमाई।

(तاریخ الخلفاء، ص 143)

اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ | اَللّٰهُ هٰكِي



اللَّهُ

مَجَارِعِ إِمَامِ هَسَنِ بَسْرِيِّ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ

## आजिजी करने वाले बुजुर्ग

حضرت حسن بصری رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ بے پتہ عاجزی کرنے والے بزرگ تھے،  
ہر شخص کو اپنے سے بہتر تصور کیا کرتے ایک بار فرمایا: اگر عذاب سے نجات  
پائیا تو میں بہتر ورنہ گتیا مجھ جیسے سینکڑوں گنہگاروں سے بہتر ہے۔

5-1-2022  
بیت -  
العلم

ہجرتے ہसन بصری رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ بہت آجیجی کرنے والے بوجورگ تھے، ہر شخس کو اپنے سے بہہتر  
تسؤور کیا کرتے، اک بار فرمایا : अगर अजाब से नजात पा गया तो मैं बेहतर वरना कुत्ता मुझ  
जैसे सेंकड़ों गुनहगारों से बेहतर है। (تذکرۃ الاولیاء، ص 43، حصہ: اول)

اْجِیْم تا بے ڈی بوجورگ ہجرتے ہसन بصری رَضِيَ اللهُ عَلَيْهِ مدینہ پاک میں اُھدے فرار کی میں پےدا ہؤ، موسلمانوں کے دوسرے خلیفہ  
ہجرتے اُمر رَضِيَ اللهُ عَنْهُ نے آپ کو تھنیق (یا'نی ڈوڈی) دی، موسلمانوں کے چوٹھے خلیفہ ہجرتے اُلی رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سے آپ کی  
مولا کا ت ہؤ، رجب شریف 110 ہجری میں آپ کی وفا ت ہؤ۔ (اعمال ترجمہ اَکمال، ص 19)

اومین یجاہ حاتم النبیین صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ا لہسا ب ہمارے بے ہسا ب مرفرت ہؤ ا







## एक दिलचस्प बात

فرمانِ امام  
باقر عظیمہ اللہ علیہ

”تمہارے بھائی کے دل میں تمہاری کتنی  
صحبت ہے، اس کا اندازہ تم اس بات سے  
لگاؤ کہ اپنے بھائی کی تمہارے دل میں کتنی صحبت ہے۔“



فرमाने इमाम बाकिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ : “तुम्हारे भाई के दिल में तुम्हारी  
कितनी महबबत है इस का अन्दाज़ा तुम इस बात से लगाओ कि अपने भाई  
की तुम्हारे दिल में कितनी महबबत है।”

(حلیۃ الاولیاء، 3/218، رقم: 3764)

قبره مبارک इमाम बाकिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

शहजादिये कौनैन हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا के दिल का चैन, हज़रते इमाम हुसैन رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के पोते और इमाम जैनुल  
आबिदीन رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के शहजादे, सिल्सिलए कादिरिय्या रजविय्या अत्तारिय्या के पांचवें शैखे शरीअतो शैखे तरीकत हज़रते  
इमाम बाकिर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ हैं। (مسالك السالكين، 1/213) आप का मज़ार शरीफ़ जन्नतुल बकीअ में है। अल्लाह पाक की उन पर  
रहमत और उन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो। اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



اللَّهُ

# 700

دुरूदे پاک

جو کوئی شعبا المعظم میں روزانہ 700 بار درود پاک پڑھے گا، اللہ پاک کچھ فرشتے  
 مقرر فرمادے گا جو اس درود پاک کو حضور اکرم صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی  
 بارگاہ میں پہنچائیں گے، اس سے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم کی روح مبارک  
 خوش ہوگی، پھر اللہ پاک ان فرشتوں کو حکم دے گا کہ اس درود پڑھنے والے کے لئے  
 قیامت تک دعائے مغفرت کرتے رہو،



صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيَّ وَسَلَّمَ

فرمانے امام جا 'فّره ساّدق رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ: جو کوئی شا'بانولِ مُؤَبَّجَم میں رोजانا 700 بار  
 دुरूदे پاک پढ़ेगा, अल्लाह पाक कुछ फ़रिश्ते मुक़रर फ़रमा देगा जो इस दुरूदे पाक को हुज़ूरे  
 अकरम صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाह में पहुंचाएंगे, इस से रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की रूहे मुबारक  
 खुश होगी, फिर अल्लाह पाक उन फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इस दुरूद पढ़ने वाले के लिये  
 क़ियामत तक दुआए मग़फ़रत करते रहो। (القول البدیع، ص 395)

अज़ीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते इमाम जा 'फ़रे सादिक رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की विलादत 17 रबीउल अब्वल 83 हिजरी पीर शरीफ़ के दिन  
 मदीनए पाक में हुई। आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ वालिदा की तरफ़ से "सिद्दीकी" और वालिद की तरफ़ से "अलवी व फ़ातिमी" हैं।  
 اٰمِيْنَ بِجَا لَا حَاتِمِ التَّوْبِيْنَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़रत हो।

اللَّهُ

دुनिया کو کیا حکم ہے ؟

فرمانِ امام جعفر صادقؑ "اللہ پاک نے دنیا کو حکم ارشاد فرمایا :  
اے دنیا! جو میری عبادت کرے تو اُس کی خدمت کر اور  
جو تیری خدمت کرے تو اُسے تھکا دے۔"



فرمانے امام جا'فّره ساّدقِ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ "اَللّٰهُ پاك نے دُنْيا كو حُكْم اِرشاد فرمّaya : اے دُنْيا ! جو ميري اِبادت کرے تو اُس كی خِدمت کر اور جو تيري خِدمت کرے تو اُسے थكا دے।"

(فہجّانے امام جا'فّره ساّدق، س. 19)

قدیم مزارے مبارک  
رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ  
امام جا'فّره ساّدق





الله

## बुरे ख़ातिमे का सबब

فرمانِ امامِ اعظمِ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ:

”بُرِّءَ خَاتِمَتِهِ كَأَسْبَبٍ مِنْ بَرِّءِ ظُلْمٍ“

۷ خواتمی حجرات  
۲۰۱۷-۲۰۱۸  
۳۱-۸-۲۰۱۷  
۵/۴۳۸

فرमाने इमामे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ:

”बुरे ख़ातिमे का सब से बड़ा सबब ज़ुल्म है।”

(الحاوی للفتاویٰ، ۲/ 138 لخصاً)

मज़ारे इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

अज़ीम ताबेई बुजुर्ग, करोड़ों हनीफ़ियों के इमाम, इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा का नाम नो'मान बिन साबित है। आप 70 हि. में इराक़ के मशहूर शहर “कूफ़ा” में पैदा हुए और 80 साल की उम्र में शा'बानुल मुअज़्ज़म 150 हि. में वफ़ात पाई। (नुज़्हुतुल क़ारी, 1/169, 219) आज भी बग़दाद शरीफ़ में आप का मज़ार शरीफ़ बरकतें लुटा रहा है।  
اٰوٰیٰنِ بَیْجَاهِ خَاتِمِ النَّبِیِّیْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اِلٰهَ الْاٰوٰیٰنِ بَیْجَاهِ خَاتِمِ النَّبِیِّیْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اِلٰهَ الْاٰوٰیٰنِ

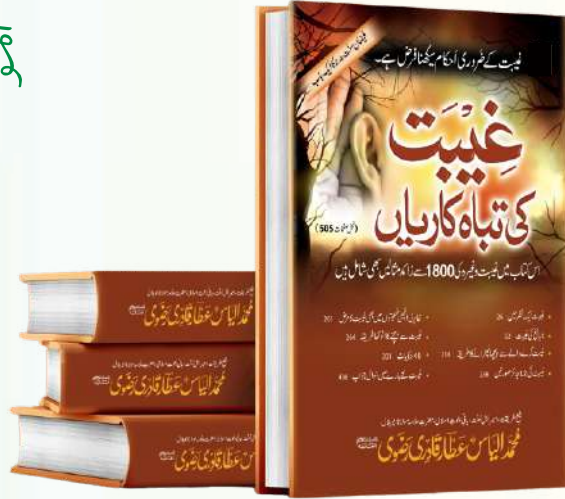


اللّٰهُ

तज़िकरा ख़ैर से करें

فرمانِ سُفیان ثوری : ”اپنے بھائی کی غیر موجودگی میں  
اُس کا ذکر اُسی طرح کرو جس طرح اپنی غیر موجودگی  
میں تم اپنا ذکر یہونا پسند کرتے ہو۔“

مکتبہ  
الاسلامیہ  
کراچی  
۱۹۸۲ء  
جلد ۱۱



فرमाने सुप्यान सौरी : رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ”अपने भाई की गैर मौजूदगी में उस का जिक्र उसी तरह  
करो जिस तरह अपनी गैर मौजूदगी में तुम अपना जिक्र होना पसन्द करते हो।“

(तन्वीर المغترين، ص 192)

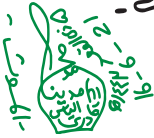
हजरते अबू अब्दुल्लाह सुप्यान बिन सईद सौरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ अमीरुल मुअमिनीन फ़िल हदीस थे। 97 हि. ब मुताबिक 716 ई. को कूफ़ा में पैदा हुए। उलूमे दीनिया और तक़वा व परहेज़ गारी में अपने ज़माने के इमाम थे। 161 हि. ब मुताबिक 778 ई. में इत्तिकाल फरमाया।

अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो। اٰمِيْن بِجَاہِ حَاتِمِ السُّبْحٰنِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

اللّٰهُ

## سو (100) हज से अफ़ज़ल

امام مالک رحمۃ اللہ علیہ بیان کرتے ہیں کہ  
 حضرت ربیعہ نے فرمایا : "میرے نزدیک کسی شخص کو لازماً  
 مسائل بتانا اور زمین کی تمام دولت صدقہ کرنے سے بہتر ہے اور  
 کسی شخص کی دینی الجھن دور کر دینا ستر حج کرنے سے افضل ہے۔"



इमाम मालिक رحمۃ اللہ علیہ بیان करते हैं कि हज़रते रबीआ ने फ़रमाया : "मेरे नज़दीक  
 किसी शख्स को नमाज़ के मसाइल बताना रूए ज़मीन की तमाम दौलत सदका करने से  
 बेहतर है और किसी शख्स की दीनी उलझन दूर कर देना सो (100) हज करने से अफ़ज़ल  
 है।" (बستان المحश्िन، ص 38)

करोड़ों मालिकियों के अज़ीम पेशवा हज़रते इमाम मालिक बिन अनस رحمۃ اللہ علیہ हैं। आप चार मुज्ताहिद इमामों में से एक  
 मशहूर इमाम और तब्ज़ ताबेई बुजुर्ग हैं। आप की विलादत मशहूर कौल के मुताबिक 93 हि. में मदीना शरीफ में हुई और  
 मदीना पाक में ही आप का इन्तिकाल शरीफ हुवा। आप का मजार शरीफ मदीने के मशहूर कब्रिस्तान जन्नतुल बकीअ में  
 है। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़रत हो।  
 اٰمِيْنَ بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



الله

## बद निगाही का नुक़सान

ارشادِ عَلَا بْنِ زِيَادٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

”عورت کی چادر پر بھی نظر نہ ڈالو۔“

”کیوں کہ نظر دل میں شہوت پیدا کرتی ہے۔“



صَلِّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

إِشْرَاقِ ابْنِ جَرِيْدٍ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ

”औरत की चादर पर भी नज़र न डालो क्यूं कि नज़र दिल में शहवत पैदा करती है।“

(الزهد للامام احمد بن حنبل، ص 265، حديث: 1428)



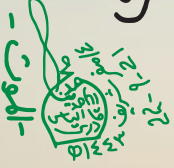
अज़ीम ताबेई बुजुर्ग हज़रते अ़ला बिन ज़ियाद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ मदीनए मुनव्वरह से हैं। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इबादत के मुआमले में नमूदो नुमाइश से बचने वाले, दुन्या से कनारा कश, आख़िरत के लिये हर वक़्त तय्यार रहने वाले, नेक आ'माल का ज़ख़ीरा करने वाले और तन्हाई पसन्द थे। आप की वफ़ात शरीफ़ 194 हिजरी में हुई। (अल्लाह वालों की बातें, 2/373) اٰمِيْنُ بِجَا لَا حَاتِمِ السُّوْبِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।



اللّٰهُ

رہمت پلٹ جاتی ہے

حضرت حاتمِ اَصَم رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فرماتے ہیں: ”جب کسی مجلسی  
(یعنی بیٹھک) میں یہ تین باتیں ہوں تو اُن سے رحمت پلٹ جاتی ہے:  
(۱) دنیا کا ڈگر (۲) زیادہ ہنسنا اور (۳) لوگوں کی غیبت کرنا۔“



ہجرتے ہاتیمے असम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ فرماتے ہیں: ”جب کسی مجلس (یا’نی बैठک) میں یہ  
تین باتیں ہوں تو ان سے رہمت پلٹ جاتی ہے: ﴿۱﴾ دنیا کا ڈگر ﴿۲﴾ جیادہ ہنسنا اور  
﴿۳﴾ لوگوں کی غیبت کرنا۔“ (تنبیہ المغترین، ص 194)



ہجرتے ہاتیمے असम رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ مشہور والی ییوللاہ ہجرتے شکیک بلبھی کے مورید اور ہجرتے اہمدد خبڑوہ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ کے  
مورشید تھے۔ ہجرتے جنید بگدادی رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ آپ کا شمار سیدیقین میں کرتے ہیں۔ آپ دوسروں کو تو خوب نواجتے لیکن اُمومن  
کسی سے کبھی کبھل نہیں فرماتے تھے، آپ کی وفات 237 ہجری میں ہوئی۔ (تذکرہ اولیا، ص 201)  
اُمّین بجا لا حاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم۔ اَللّٰہ پاک کی ان پر رہمت اور ان کے سدقے ہماری بے حساب مہر ہو۔

اللّٰهُ

## अन्जाम की खुशी

حضرت شیخ ساری سقطی رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

”لوگ جتنا اپنی اولاد پر شفقت کرتے ہیں، اتنی شفقت اپنی جانوں پر (کرتے)  
 کرتے (یعنی گناہوں سے بچتے، نیکیاں کرتے) تو انہیں اپنے انجام (یعنی خاتمہ) میں  
 خوشی ملتی۔“



हज़रते शैख सरी सकती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فرماتے हैं: “लोग जितना अपनी औलाद पर शफ़क़त करते हैं उतनी शफ़क़त अपनी जानों पर (भी) करते (या'नी गुनाहों से बचते, नेकियां करते) तो उन्हें अपने अन्जाम (या'नी ख़ातिमे) में खुशी मिलती।”

(حلیۃ الاولیاء، 10/122، رقم: 14707)



सिल्सलए आलिया कादिरिय्या रजविय्या के अज़ीम बुजुर्ग हज़रते अबुल हसन सरी बिन मुगल्लिस सकती رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की पैदाइश तक्रीबन 155 हि. में बग़दाद शरीफ़ में हुई। आप رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ शुरूअ में “सक़त् (या'नी मा'मूली और छोटी मोटी चीज़ें)” बेचते थे। इसी मुनासबत से आप को “सक़ती” कहा जाता है। आप हज़रते मा'रूफ़ कर्खी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मुरीद और हज़रते जुनैद बग़दादी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के मामूँ और उस्ताद हैं। रमज़ानुल मुबारक 253 हि. को अज़ाने फ़ज़्र के बा'द वफ़ात पाई और मज़ारे फ़ाइजुल अन्वार शूनीज़िय्या के क़ब्रिस्तान में है।

(تذکرۃ الاولیاء، 1/246)

اٰمِیْن بِجَاۤءِ خَاتِمِ السَّعِیْدِیْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ اَللّٰهُ پاك كى उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

اللَّهُ

مَجَارِعِ إِمَامِ بُوخَارِي رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ

## कुव्वते हाफ़िज़ा

حضرتِ امام بخاری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں:

”میں نے انتہائی توجّہ اور استقامت کے ساتھ مطالعہ

کرنے کو قوّتِ حافظہ کیلئے بڑا فائدہ مند پایا۔“

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
مَجَارِعِ إِمَامِ بُوخَارِي  
رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ  
-الْحَمْدُ-

हज़रते इमाम बुख़ारी رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं :

“मैं ने इन्तिहाई तवज्जोह और इस्तिक़ामत के साथ मुतालाआ करने को कुव्वते हाफ़िज़ा के लिये बड़ा फ़ाएदे मन्द पाया है।” (फ़ैज़ाने इमाम बुख़ारी, स. 9)

इमाम बुख़ारी रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ की विलादत 13 शव्वाल 194 हि. जुमुआ के रोज़ (उज़्बेकिस्तान के एक शहर) “बुखारा” में हुई। आप रَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ का नाम मुहम्मद और कुन्यत अबू अब्दुल्लाह है। आप के अल्काबात में से येह भी हैं : अमीरुल मुअमिनीन फ़िल हदीस, हाफ़िज़ुल हदीस वग़ैरा। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।  
اٰمِيْنٌ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



اللّٰه

## تक्लीف دूर करो

ارشادِ بشر حافی علیہ رحمۃ اللہ العافی

”مسلمان کے دل میں خوشی داخل کرنا، مظلوم کی فریاد رسی کرنا،  
اُس کی تکلیف کو دور کرنا اور کمزور کی مدد کرنا  
۱۰۰ نفل حج سے افضل ہے۔“

تقریباً  
۱۷-۵-۱۸  
۱۳۳۶ھ

إرشادِ بشر حافی علیہ رحمۃ اللہ العافی: ”مسلمان کے دل میں خوشی داخِل کرنا،  
مظلوم کی فریاد رسی کرنا، اُس کی تکلیف کو دूर کرنا اور کمزور کی  
مدد کرنا 100 نفل حج سے افضل ہے۔“ (توت القلوب، 1/165)



ہجرتے بشر بن ہارِس بگدادی رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ كى كُنْىت اَبُو نَسْر هِىَ . ”هَافِى“ كِى لَكَب سِى مَشْهُور هِىَ . 152 هِىَ . كِى  
پَئِدا هُوَ اَوْر 227 هِىَ . كِى جُمُوعَا كِى دِىن رَبِىْذِل اَبْوَىل كِى مَهِيْنِى مِى بَغْدَاد مِى اِنْتِكَاىل فَرْمَاىا . (152 رَهْمَت  
بَرى هِىَكَاىات ، س . 175 ، 177) اَللّٰه پاك نِى اِن كِى جِنَاجِى كِى سَاىِى اَلانِى وَاىِى كِى كِى مَغْفِرَت فَرْمَا دِى .  
اَوْمِيْن بِجَاىِى اَحَاىِم السَّيِّئِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاىِى وَسَلَّمَ . اَللّٰه پاك كِى اِن پَر رَهْمَت اَوْر اِن كِى سَدَكِى هَمَارِى بِى هِىَسَاب مَغْفِرَت هِىَ .

اللّٰهُ

## बुराइयों की चाबी

عُقَّةٌ آتَتْ تُوْأَسُ كُوْدُوْر كَرِيْنٍ، عُقَّةٌ مَطَابِقُ كَرْنُ كُرِيْنٍ -  
 حضرت جعفر بن محمد رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمَا فَمَاتَ فِيْنَ:  
 عُقَّةٌ بِرُبْرَائِيٍّ كِيْ جَابِي (KEY) هِيَ -



गुस्सा आए तो उस को दूर करें, गुस्से के मुताबिक़ कर न गुज़रें ।

हज़रते जा 'फ़र बिन मुहम्मद رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِمَا फ़रमाते हैं :

गुस्सा हर बुराई की चाबी (Key) है ।

(الروايع، 1/107)



इमामे वक़्त हज़रते इमाम अबुल अब्बास जा 'फ़र बिन मुहम्मद मुस्तग़िफ़री हनफ़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की विलादत 350 हि. को एक इल्मी घराने में हुई और 29 या 30 जुमादल उला 432 हि. को नसफ़ में वफ़ात पाई, आप बहुत बड़े आलिम, मुहद्दिस, उस्ताजुल उलमा और साहिबे तसानीफ़ हैं । कई उलमा ने आप से इल्मे दीन हासिल किया । (الفوائد البهية، ص 74، رقم: 104)

اٰمِيْنَ بِجَاهِ خَاتِمِ النَّبِيِّيْنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ।  
 अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो ।



اللّٰه

## बुरी सोहबत का नुक़सान

ارشادِ داتا حضورِ رحمة اللّٰه عليه

”بُुरے لوگوں کی صحبت میں رہنے والا شرارتِ نفس کا  
 شکار بن جاتا ہے، اگر بندے میں نیکی اور بھلائی ہو تو  
 نیکوں کی صحبت میں رہنا پسند کرے گا“



इशादे दाता हज़ूर رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ :

“बुरे लोगों की सोहबत में रहने वाला शरारते नफ़्स का शिकार बन जाता है, अगर बन्दे में नेकी और भलाई हो तो नेकों की सोहबत में रहना पसन्द करेगा।” (फैज़ाने दाता अली हिज्वेरी, स. 70)

مجازے دااتا اّلیٰ هیجّویری رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ

हज़रत दाता अली हिज्वेरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की विलादत कमो बेश 400 हि. में ग़ज़नी में हुई, आप रَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ की कुन्यत अबुल हसन, नाम अली और लक़ब दाता गन्ज बख़्श है। आप रَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ का शजरए तरीक़त 9 वासितों से मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अलिय्युल मुर्तजा शेरे खुदा رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُ तक पहुंचता है। अल्लाह पाक की اَمِيْنِ بِجَا لاَ حَاتِمِ السَّيِّئِيْنَ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़रत हो।



## شبهه براءت شبهه شفاءت

شبِ بَرَاءَت کو "شبِ شَفَاعَت" بھی کہتے ہیں، کیوں کہ اس رات میں آپ صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم نے اپنی اُمت کی شَفَاعَت کی درخواست کی تو اللہ پاک نے تمام اُمت کی شَفَاعَت منظور فرمائی مگر وہ شخص جو رحمتِ الہی سے اُونٹ کی طرح دُور بھاگ گیا اور گناہوں پر اصرار (یعنی بار بار) کر کے خود سے بہت زیادہ

دور ہوتا گیا۔



إمام گجالی رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتے ہیں : شبهه براءت کو "شبهه شفاءت" بھی کہتے ہیں، ک्यूں کي اس رات में आप صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ نے अपनी उम्मत की शفاءت की दरخواست की तो अल्लाह पाक ने तमाम उम्मत की शفاءत मन्जूर فرमाई मगर वोह शख्स जो रहमत इलाही से ऊंट की तरह दूर भाग गया और गुनाहों पर इसرار (या'नी बार बार) कर के खुद ही बहुत ज़ियादा दूर होता गया । (مکاشفة القلوب، ص 303 لخصاً)

إمام گجالی رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ کا نام "مُحَمَّد" था । आप 450 हि. मुताबिक 1058 ई. में पैदा हुए । (تحف السادة المتقين، 9/1) विसाल शरीफ के वक्त बुखारी शरीफ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के सीने पर थी, आप ने बार बार येह मुखसर और जामेअ तरीन नसीहत शागिर्दों को फरमाई : "عَنْكَ بِإِدْخَالِ" या'नी इख़लास इख़्तियार कीजिये, येह फरमाते ही आप 14 जुमादल उख़्रा 505 हिजरी में इन्तिकाल फरमा गए । (مرآة الجنان، 3/141)





اللہ

## موسیبت میں ن پڑو

کہا گیا ہے: "زبان کو آزاد مت چھوڑو یہ تمہاری عزت خراب کر دے گی۔"

اور یہ بھی کہا گیا ہے کہ "زبان کی حفاظت کرو، نہ بولو نہ مصیبت میں پڑو،

کیوں کہ مصیبتیں زبان کے سپرد کر دی گئی ہیں۔"



ایمام گزالی رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرماتے ہیں: کہا گیا ہے: "جَبان کو آجّاد مت छोड़ो वरना येह तुम्हारी इज़ज़त ख़राब कर देगी।" और येह भी कहा गया है कि "जَبान की हिफ़ाज़त करो, न बोलो न मुसीबत में पड़ो, क्यूं कि मुसीबतें जَبान के सिपुर्द कर दी गई हैं।"

(منہاج العابدین، ص 66)





الله

## खुशी भी मुसीबत

فرمانِ سید احمد کبیر رفاہی رحمۃ اللہ علیہ :  
 ”کتنے ہی خوش بیونے والے ایسے ہیں کہ  
 ان کی خوشی ان کے لئے مُصیبت بن جاتی ہے۔“

۲۳-۱۲-۲۰  
 ۹/۴۴  
 -۱۹۶۷



فرमाने सख्खिद अहमद कबीर रिफ़ाई رحمه الله عليه : “कितने ही खुश होने वाले ऐसे हैं कि उन की खुशी उन के लिये मुसीबत बन जाती है।”

(फैज़ाने सख्खिद अहमद कबीर रिफ़ाई, स. 28)



رحمۃ اللہ علیہ

मज़ारे अहमद कबीर रिफ़ाई

आप का नाम अहमद है। जदे अमजद “रिफ़ाआ” की मुनासबत से रिफ़ाई कहलाए। आप सख्खिदुश्शुहदा, नवासए मुस्तफ़ा इमामे हुसैन رضي الله عنه की औलाद में से हैं, आप की कुन्यत अबुल अब्बास और लक़ब मुहयुद्दीन है। आप رحمه الله عليه की विलादत 15 रजब शरीफ़ 512 हि. मुताबिक़ पहली नवम्बर 1118 ई. में हुई। वफ़ात शरीफ़ के वक़्त ज़बान पर येह जारी था :

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللَّهِ -

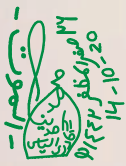
اٰمِيْن بِحَاثَمِ السَّعِيْدِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ | अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।



## मीलाद मनाने का शानदार फ़ाएदा

امام ابرج جو زری رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں :

صیلا دمنانے میں شیطان کی ذلت اور  
اہل ایمان کی تقویت (یعنی مضبوطی) ہے۔



صلوا علی الحبيب! صلی اللہ علیٰ ہی سّد

इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرماتے हैं : मीलाद मनाने में शैतान की ज़िल्लत

और अहले ईमान की तक्वियत (या'नी मजबूती) है ।

(سُئِلَ الْبُهْدِيُّ وَالرَّشَادُ، 1/363)



कब्रें मुबारक इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

इमाम अबुल फ़रज अब्दुर्रहमान बिन अली जौज़ी 511 हि. में पैदा हुए। अपने ज़माने में वा'जो ख़िताबत के इमाम थे, एक तहकीक़ के मुताबिक़ आप रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ का रोज़ाना 40 सफ़हात लिखने का मा'मूल था। आप हाफ़िज़ुल हदीस थे। (एक लाख अहादीसे मुबारका सनद के साथ याद करने वाला हाफ़िज़ुल हदीस होता है।) लाखों अफ़राद ने आप के हाथ पर तौबा की। 13 रमज़ानुल मुबारक 597 हि. शबे जुमुआ में वफ़ात हुई, बग़दाद शरीफ़ में हज़रते इमाम अहमद बिन हम्बल रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के मज़ार शरीफ़ के पहलू में आप दफ़न किये गए। (आंसूओं का दरिया, स. 15, 16 मुलख़ख़सन) अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।  
اصْبِرْ بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

مجاڑے خااا  
گاریب نوااا  
رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

الله

कुरआने करीम को  
देखने के फ़ाएदे

فرمانِ خواا  
غریب نواا رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ : قرآن کریم کو دیکھنے سے نظر  
تیز ہوتی ہے، آنکھوں کے درد سے حفاظت ہوتی ہے



اور آنکھیں خشک نہیں ہوتیں

فرمانے خااا گاریب نواا رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ :

कुरआने करीम को देखने से नज़र तेज़ होती है, आंखों के दर्द से

ह़िफ़ाज़त होती है और आंखें खुशक नहीं होतीं ।

(दलीलुल अरिफ़ीन उर्दू अज़ हशत बिहिशत, स. 80)



खाा ग़रीब नवाा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की विलादत 14 रजब शरीफ़ 537 हि. मुताबिक़ 1142 ई. में हुई और इन्तिकाल शरीफ़ (Death) भी रजब शरीफ़ के महीने की 6 तारीख़ 633 हि. को हुआ । आप हसनी हुसैनी सख़ियद हैं । आप रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की वालिदए मोहतरमा हज़रते शैख़ अब्दुल कादिर जीलानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की चचााद बहन हैं, इस रिश्ते से हुज़ूरे ग़ौसे पाक खाा ग़रीब नवाा के मामू होते हैं । अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मफ़िरत हो ।

اصْبِرْ بِمَا آتَاكَ السَّيِّئَاتِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ





## فرامینِ بابا فرید رحمۃ اللہ علیہ

اپنی زبان اور ہاتھ سے کسی کو مت ستانا، نہ کسی کو بُرا بھلا کہنا، اپنے ظاہر کو محفوظ رکھنا، آنکھ اور زبان کی حفاظت کرنا اور اپنی رضا کے الہی میں مصروف رکھنا، یادِ الہی کو دل میں بسائے رکھنا، ذکر و تلاوت سے ہمیشہ اپنی زبان تڑکھنا اور شیطانی وسوسوں سے دل کو بچائے رکھنا۔

۲۰-۸-۱۱  
۱۱-۸-۲۰  
۱۱-۸-۲۰  
۱۱-۸-۲۰

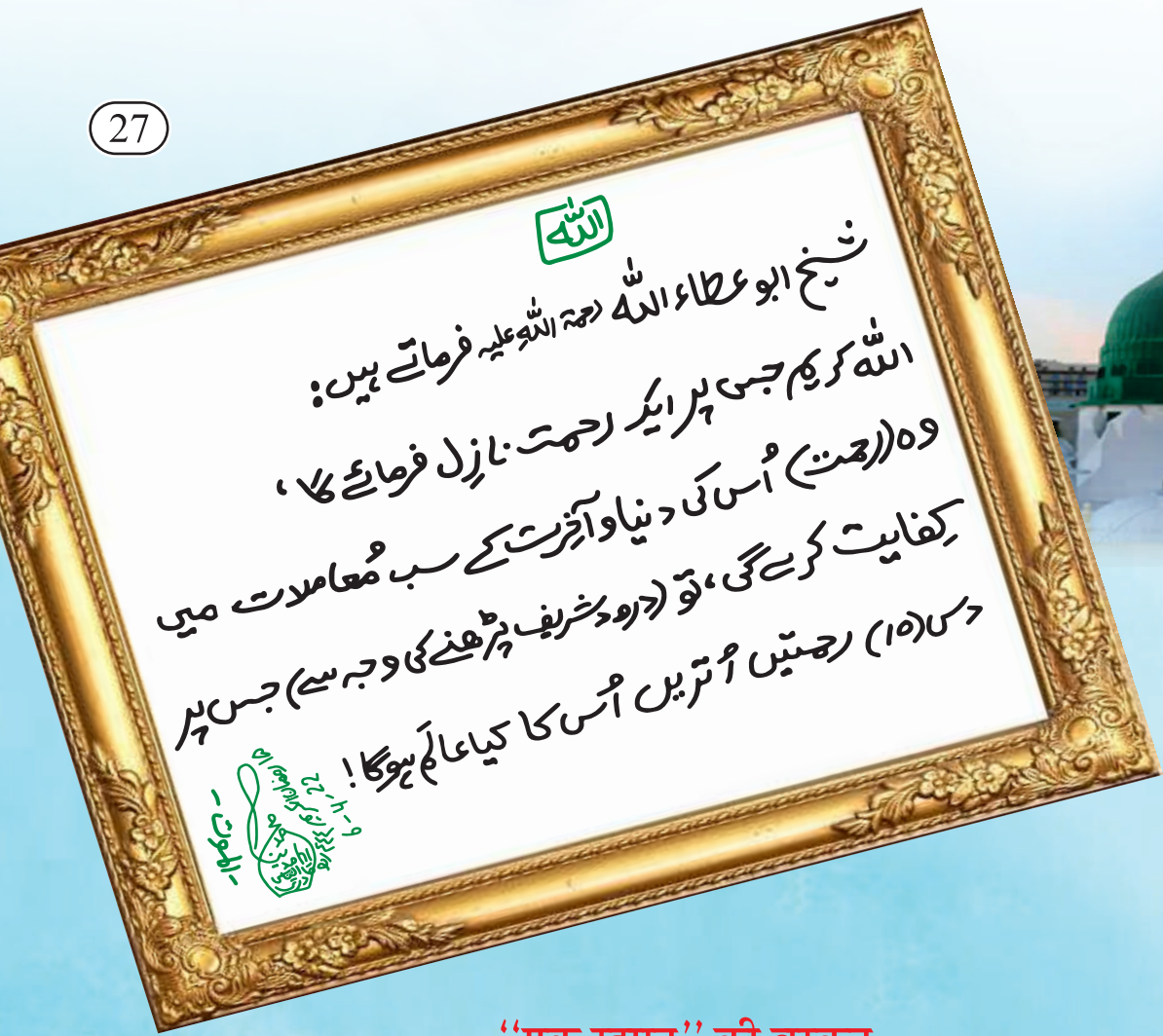
### رحمۃ اللہ علیہ **فرامینِ بابا فرید**

अपनी ज़बान और हाथ से किसी को मत सताना, न किसी को बुरा भला कहना, अपने ज़ाहिर को महफूज़ रखना, आंख और ज़बान की हिफ़ाज़त करना और इन्हें रिज़ाए इलाही में मसरूफ़ रखना, यादे इलाही को दिल में बसाए रखना, ज़िक्रो तिलावत से हमेशा अपनी ज़बान तर रखना और शैतानी वस्वसों से दिल को बचाए रखना।

(सीरते बाबा फ़रीद, स. 14)

आप رحمۃ اللہ علیہ کا نام “مسرود” جب कि “फ़रीदुद्दीन गन्जे शकर” के लक़ब से मशहूर हैं, आप رحمۃ اللہ علیہ का सिल्लिए नसब मुसलमानों के दूसरे खलीफ़ा हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म' तक पहुंचता है। आप رحمۃ اللہ علیہ 569 या 571 हि. में पैदा हुए। आखिरी दिनों में बीमारी की हालत में भी आप رحمۃ اللہ علیہ नमाज़ बा जमाअत ही अदा करते। दौराने नमाज़ सज्दे में इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।

امین بجا خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وآلہ وسلم



### “एक रहमत” की बरकत

शैख अबू अताउल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فرماتے हैं : **अल्लाह करीम** जिस पर एक रहमत नाज़िल फ़रमाएगा वोह (रहमत) उस की दुन्या व आख़िरत के सब मुआमलात में क़िफ़ायत करेगी, तो (दुरूद शरीफ़ पढ़ने की वजह से) जिस पर दस (10) रहमतें उतरें उस का क्या अ़लाम होगा !

(مطالع المسرات، ص 30)

आप का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अबू अताउल्लाह अरशीदी शाफ़ेई है। आप की विलादत रजब के महीने में 767 हिजरी में काहिरा में हुई। आप हाफ़िज़े कुरआन, कसरत से तिलावते कुरआन करने वाले, हुस्ने अख़्लाक के पैकर, सख़ी, बेहतरीन मुहद्दिस, फ़कीह और ख़तीब थे। आप का इन्तिक़ाल 11 रबीउल शबे जुमुअ़ा 854 हिजरी में 87 साल की उम्र में काहिरा में ही हुवा।

(الضوء اللاح، 8/101 ملقطاً)

اصْبِرْ بِجَالِدِ حَاسَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ।  
अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।







اللّٰه

हुजूर की विलादत गाह की बरकत

حضرت علامہ قطب الدین رحمۃ اللہ علیہ فرماتے ہیں :

”حضور صلی اللہ علیہ والہ وسلم کی (مکہ مکرمہ میں واقع)

ولادت گاہ پر دعا قبول ہوتی ہے۔“

۲۰-۱۰-۲۰  
جمع الاول ۱۴۲۸ھ  
الہوت

ہجرتے اہللاما کولبوہین علیہ اللہ علیہ فرماتے ہیں :

”ہجرتے اہللاما کولبوہین علیہ اللہ علیہ والہ وسلم کی (مکہ مکرمہ میں واقع) ولاءت گاہ پر دوا کبول ہوتی ہے۔“

(بلد الامین، ص 201)



آप का नाम मुहम्मद बिन अहमद बिन मुहम्मद नहरवाली और लकब कुलबुद्दीन है। आप हनफी कादरी हैं। 917 हिजरी में मक्का मुकर्रमा में पैदा हुए। मुस्तनद अलिम, मुफ़स्सरो मुहद्दिस और मुसन्निफ़ो मुहक्किक थे। आप मस्जिदुल हराम में फ़िक्ह व तफ़्सीर का दर्स दिया करते थे फिर मक्का मुकर्रमा के मुफ़ती मुकर्रर हुए। आप का विसाल एक क़ौल के मुताबिक़ 988 हिजरी में हुवा। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सद्के हमारी बे हिसाब मग़फ़रत हो। اٰمِيْن يٰجِبْرٰىلُ خَاتَمَ الرَّسُوْلِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ





الله

## ईमान अफ़ोज़ बात

رحمة الله عليه  
 حضرت شیخ عبدالحق محدث دہلوی فرماتے ہیں :  
 ” جس مسلمان میں علمِ دین حاصل  
 کرنے کی حرص اور اس کا شوق ہوگا  
 اُس کا ایمان پر خاتمہ ہوگا۔ “

۱۰۔ اوفان  
 ۱۱۔ ۱۲۔ ۱۳۔  
 ۱۴۔ ۱۵۔ ۱۶۔  
 ۱۷۔ ۱۸۔ ۱۹۔  
 ۲۰۔ ۲۱۔ ۲۲۔  
 ۲۳۔ ۲۴۔ ۲۵۔  
 ۲۶۔ ۲۷۔ ۲۸۔  
 ۲۹۔ ۳۰۔ ۳۱۔  
 ۳۲۔ ۳۳۔ ۳۴۔  
 ۳۵۔ ۳۶۔ ۳۷۔  
 ۳۸۔ ۳۹۔ ۴۰۔  
 ۴۱۔ ۴۲۔ ۴۳۔  
 ۴۴۔ ۴۵۔ ۴۶۔  
 ۴۷۔ ۴۸۔ ۴۹۔  
 ۵۰۔ ۵۱۔ ۵۲۔  
 ۵۳۔ ۵۴۔ ۵۵۔  
 ۵۶۔ ۵۷۔ ۵۸۔  
 ۵۹۔ ۶۰۔ ۶۱۔  
 ۶۲۔ ۶۳۔ ۶۴۔  
 ۶۵۔ ۶۶۔ ۶۷۔  
 ۶۸۔ ۶۹۔ ۷۰۔  
 ۷۱۔ ۷۲۔ ۷۳۔  
 ۷۴۔ ۷۵۔ ۷۶۔  
 ۷۷۔ ۷۸۔ ۷۹۔  
 ۸۰۔ ۸۱۔ ۸۲۔  
 ۸۳۔ ۸۴۔ ۸۵۔  
 ۸۶۔ ۸۷۔ ۸۸۔  
 ۸۹۔ ۹۰۔ ۹۱۔  
 ۹۲۔ ۹۳۔ ۹۴۔  
 ۹۵۔ ۹۶۔ ۹۷۔  
 ۹۸۔ ۹۹۔ ۱۰۰۔

हज़रते शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी رحمۃ اللہ علیہ فرماتے  
 हैं : “जिस मुसलमान में इल्मे दीन हासिल करने की हिर्स  
 और इस का शौक़ होगा उस का ईमान पर ख़ातिमा होगा।”

(لمعات لتتبع، 1/559-560)

شخصیت اللہ علیہ  
 شایخ ابوبکر  
 ابوبکر ابوبکر  
 ابوبکر ابوبکر





اللّٰهُ

## अल्लाह पाक की नाराजी की निशानी

حضرت عبداللہ عاوی شافعی رحمۃ اللہ فرماتے ہیں :

اللہ پاک کی نظرِ رحمت سے محرومی ۱۹۱ اُس کی ناراہنی کی نشانی یہ ہے کہ

بندہ گناہوں میں مبتلا ہو جائے۔

بندہ گناہوں میں مبتلا ہو جائے۔

ہجرتے اَبْدُللّٰہ اَلْوٰی شَافِعِیُّ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ : اَللّٰہ پاك كى نجرے  
رہمت سے مہرُومی اور اس کی ناراہی کی نشانی یہ ہے کہ بندا گناہوں میں  
مبتلا ہو جاے۔ (رسالة المذاکرة مع الإخوان المحبين من أهل الخیر والدین، ص 23)



हजرتे हबीब اَبْدُللّٰہ اَلْوٰی شَافِعِیُّ رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِ 5 سَفَرِ شَرِیْفِ 1044 هِجَرِی مَیں پَیْدَا هُو، بچپن ही से नूरे बसारत (या'नी देखने की कुवत) से महरुमी थी मगर अल्लाह पाक ने "नूरे बसीरत" से नवाजा। बरोज मंगल 7 जुल का'दतिल हराम 1132 हिजरी को दुन्याए फानी से रुखसत हो गए। आप का मजार शरीफ "तरीम" (यमन शरीफ) के कब्रिस्तान में है।

अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़फ़रत हो। اٰمِیْن بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِیِّیْنَ عَلَیْهِمُ السَّلَامُ



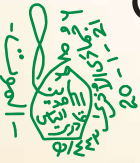


اللہ

دुश्मने खुदा कौन ?

فرمانِ صدرِ الآفا ضل ینظ

”جو بد نصیب، صحابہ (علیہم الرضوان) کی شان میں  
بے ادبی کے ساتھ زبان کھولے وہ دشمنِ خدا اور رسول  
سے، مسلمان ایسے شخص کے پاس نہ بیٹھے۔“



فرمانے सदरूल अफ़ज़िल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ: ”جو बद नसीब, सह़ाबा (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) की शान में बे अदबी के साथ ज़बान खोले वोह दुश्मने खुदा व रसूल है, मुसल्मान ऐसे शख़्स के पास न बैठे।“ (सवानेहे करबला, स. 31)

कब्र मुबारक सदरूल अफ़ज़िल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

हज़रते अल्लामा मौलाना सय्यद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ की विलादत 21 सफरूल मुजफ़्फर 1300 हि. मुताबिक पहली जनवरी 1883 बरोज पीर शरीफ ”हिन्द“ के शहर ”मुरादआबाद“ में हुई। उठते बैठते पढ़ते थे। इन्तिकाल शरीफ के वक्त कलिमए पाक اللهُ رَسُولُ مُحَمَّدٍ رَسُوْلُ اللهِ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ إِلَّا اللهُ مُحَمَّدٌ رَسُوْلُ اللهِ إِلَّا اللهُ पढ़ना शुरू कर दिया, 19 जुल हज शरीफ 1367 हि. को दुन्या से रुख़सत हुए, जामिअ नईमिय्या (मुरादआबाद, हिन्द) में आप का मज़ार शरीफ है। अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मरिफ़रत हो।

اَمْيُنْ بِجَاوَحَاتِمِ النَّجِيْبِيْنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

اللّٰهُ

## दीनी किताबों का अदब

مُحَدِّثِ الْعِظَمِ مَوْلَانَا سَرْدَارِ أَحْمَدِ چِشْتِي قَادِرِ رَحْمَةِ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتے ہیں :  
 ”قرآن و حدیث امر کُتُبِ دینی کے بارے میں یہ نہیں کہنا چاہئے کہ  
 وہاں پڑی ہیں بلکہ یوں کہنا چاہئے کہ وہاں رکھی ہیں۔“

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
 الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي هَدَانَا لِهَذَا وَمَا كُنَّا لِنَشْكُرَهُ لَوْلَا رَحْمَتُ اللَّهِ عَلَيْنَا لَكُنَّا مِنَ الْخَاسِرِينَ  
 ۱۱۷  
 ۱۱۸  
 ۱۱۹  
 ۱۲۰  
 ۱۲۱  
 ۱۲۲  
 ۱۲۳  
 ۱۲۴  
 ۱۲۵  
 ۱۲۶  
 ۱۲۷  
 ۱۲۸  
 ۱۲۹  
 ۱۳۰  
 ۱۳۱  
 ۱۳۲  
 ۱۳۳  
 ۱۳۴  
 ۱۳۵  
 ۱۳۶  
 ۱۳۷  
 ۱۳۸  
 ۱۳۹  
 ۱۴۰  
 ۱۴۱  
 ۱۴۲  
 ۱۴۳  
 ۱۴۴  
 ۱۴۵  
 ۱۴۶  
 ۱۴۷  
 ۱۴۸  
 ۱۴۹  
 ۱۵۰  
 ۱۵۱  
 ۱۵۲  
 ۱۵۳  
 ۱۵۴  
 ۱۵۵  
 ۱۵۶  
 ۱۵۷  
 ۱۵۸  
 ۱۵۹  
 ۱۶۰  
 ۱۶۱  
 ۱۶۲  
 ۱۶۳  
 ۱۶۴  
 ۱۶۵  
 ۱۶۶  
 ۱۶۷  
 ۱۶۸  
 ۱۶۹  
 ۱۷۰  
 ۱۷۱  
 ۱۷۲  
 ۱۷۳  
 ۱۷۴  
 ۱۷۵  
 ۱۷۶  
 ۱۷۷  
 ۱۷۸  
 ۱۷۹  
 ۱۸۰  
 ۱۸۱  
 ۱۸۲  
 ۱۸۳  
 ۱۸۴  
 ۱۸۵  
 ۱۸۶  
 ۱۸۷  
 ۱۸۸  
 ۱۸۹  
 ۱۹۰  
 ۱۹۱  
 ۱۹۲  
 ۱۹۳  
 ۱۹۴  
 ۱۹۵  
 ۱۹۶  
 ۱۹۷  
 ۱۹۸  
 ۱۹۹  
 ۲۰۰  
 ۲۰۱  
 ۲۰۲  
 ۲۰۳  
 ۲۰۴  
 ۲۰۵  
 ۲۰۶  
 ۲۰۷  
 ۲۰۸  
 ۲۰۹  
 ۲۱۰  
 ۲۱۱  
 ۲۱۲  
 ۲۱۳  
 ۲۱۴  
 ۲۱۵  
 ۲۱۶  
 ۲۱۷  
 ۲۱۸  
 ۲۱۹  
 ۲۲۰  
 ۲۲۱  
 ۲۲۲  
 ۲۲۳  
 ۲۲۴  
 ۲۲۵  
 ۲۲۶  
 ۲۲۷  
 ۲۲۸  
 ۲۲۹  
 ۲۳۰  
 ۲۳۱  
 ۲۳۲  
 ۲۳۳  
 ۲۳۴  
 ۲۳۵  
 ۲۳۶  
 ۲۳۷  
 ۲۳۸  
 ۲۳۹  
 ۲۴۰  
 ۲۴۱  
 ۲۴۲  
 ۲۴۳  
 ۲۴۴  
 ۲۴۵  
 ۲۴۶  
 ۲۴۷  
 ۲۴۸  
 ۲۴۹  
 ۲۵۰  
 ۲۵۱  
 ۲۵۲  
 ۲۵۳  
 ۲۵۴  
 ۲۵۵  
 ۲۵۶  
 ۲۵۷  
 ۲۵۸  
 ۲۵۹  
 ۲۶۰  
 ۲۶۱  
 ۲۶۲  
 ۲۶۳  
 ۲۶۴  
 ۲۶۵  
 ۲۶۶  
 ۲۶۷  
 ۲۶۸  
 ۲۶۹  
 ۲۷۰  
 ۲۷۱  
 ۲۷۲  
 ۲۷۳  
 ۲۷۴  
 ۲۷۵  
 ۲۷۶  
 ۲۷۷  
 ۲۷۸  
 ۲۷۹  
 ۲۸۰  
 ۲۸۱  
 ۲۸۲  
 ۲۸۳  
 ۲۸۴  
 ۲۸۵  
 ۲۸۶  
 ۲۸۷  
 ۲۸۸  
 ۲۸۹  
 ۲۹۰  
 ۲۹۱  
 ۲۹۲  
 ۲۹۳  
 ۲۹۴  
 ۲۹۵  
 ۲۹۶  
 ۲۹۷  
 ۲۹۸  
 ۲۹۹  
 ۳۰۰  
 ۳۰۱  
 ۳۰۲  
 ۳۰۳  
 ۳۰۴  
 ۳۰۵  
 ۳۰۶  
 ۳۰۷  
 ۳۰۸  
 ۳۰۹  
 ۳۱۰  
 ۳۱۱  
 ۳۱۲  
 ۳۱۳  
 ۳۱۴  
 ۳۱۵  
 ۳۱۶  
 ۳۱۷  
 ۳۱۸  
 ۳۱۹  
 ۳۲۰  
 ۳۲۱  
 ۳۲۲  
 ۳۲۳  
 ۳۲۴  
 ۳۲۵  
 ۳۲۶  
 ۳۲۷  
 ۳۲۸  
 ۳۲۹  
 ۳۳۰  
 ۳۳۱  
 ۳۳۲  
 ۳۳۳  
 ۳۳۴  
 ۳۳۵  
 ۳۳۶  
 ۳۳۷  
 ۳۳۸  
 ۳۳۹  
 ۳۴۰  
 ۳۴۱  
 ۳۴۲  
 ۳۴۳  
 ۳۴۴  
 ۳۴۵  
 ۳۴۶  
 ۳۴۷  
 ۳۴۸  
 ۳۴۹  
 ۳۵۰  
 ۳۵۱  
 ۳۵۲  
 ۳۵۳  
 ۳۵۴  
 ۳۵۵  
 ۳۵۶  
 ۳۵۷  
 ۳۵۸  
 ۳۵۹  
 ۳۶۰  
 ۳۶۱  
 ۳۶۲  
 ۳۶۳  
 ۳۶۴  
 ۳۶۵  
 ۳۶۶  
 ۳۶۷  
 ۳۶۸  
 ۳۶۹  
 ۳۷۰  
 ۳۷۱  
 ۳۷۲  
 ۳۷۳  
 ۳۷۴  
 ۳۷۵  
 ۳۷۶  
 ۳۷۷  
 ۳۷۸  
 ۳۷۹  
 ۳۸۰  
 ۳۸۱  
 ۳۸۲  
 ۳۸۳  
 ۳۸۴  
 ۳۸۵  
 ۳۸۶  
 ۳۸۷  
 ۳۸۸  
 ۳۸۹  
 ۳۹۰  
 ۳۹۱  
 ۳۹۲  
 ۳۹۳  
 ۳۹۴  
 ۳۹۵  
 ۳۹۶  
 ۳۹۷  
 ۳۹۸  
 ۳۹۹  
 ۴۰۰  
 ۴۰۱  
 ۴۰۲  
 ۴۰۳  
 ۴۰۴  
 ۴۰۵  
 ۴۰۶  
 ۴۰۷  
 ۴۰۸  
 ۴۰۹  
 ۴۱۰  
 ۴۱۱  
 ۴۱۲  
 ۴۱۳  
 ۴۱۴  
 ۴۱۵  
 ۴۱۶  
 ۴۱۷  
 ۴۱۸  
 ۴۱۹  
 ۴۲۰  
 ۴۲۱  
 ۴۲۲  
 ۴۲۳  
 ۴۲۴  
 ۴۲۵  
 ۴۲۶  
 ۴۲۷  
 ۴۲۸  
 ۴۲۹  
 ۴۳۰  
 ۴۳۱  
 ۴۳۲  
 ۴۳۳  
 ۴۳۴  
 ۴۳۵  
 ۴۳۶  
 ۴۳۷  
 ۴۳۸  
 ۴۳۹  
 ۴۴۰  
 ۴۴۱  
 ۴۴۲  
 ۴۴۳  
 ۴۴۴  
 ۴۴۵  
 ۴۴۶  
 ۴۴۷  
 ۴۴۸  
 ۴۴۹  
 ۴۵۰  
 ۴۵۱  
 ۴۵۲  
 ۴۵۳  
 ۴۵۴  
 ۴۵۵  
 ۴۵۶  
 ۴۵۷  
 ۴۵۸  
 ۴۵۹  
 ۴۶۰  
 ۴۶۱  
 ۴۶۲  
 ۴۶۳  
 ۴۶۴  
 ۴۶۵  
 ۴۶۶  
 ۴۶۷  
 ۴۶۸  
 ۴۶۹  
 ۴۷۰  
 ۴۷۱  
 ۴۷۲  
 ۴۷۳  
 ۴۷۴  
 ۴۷۵  
 ۴۷۶  
 ۴۷۷  
 ۴۷۸  
 ۴۷۹  
 ۴۸۰  
 ۴۸۱  
 ۴۸۲  
 ۴۸۳  
 ۴۸۴  
 ۴۸۵  
 ۴۸۶  
 ۴۸۷  
 ۴۸۸  
 ۴۸۹  
 ۴۹۰  
 ۴۹۱  
 ۴۹۲  
 ۴۹۳  
 ۴۹۴  
 ۴۹۵  
 ۴۹۶  
 ۴۹۷  
 ۴۹۸  
 ۴۹۹  
 ۵۰۰  
 ۵۰۱  
 ۵۰۲  
 ۵۰۳  
 ۵۰۴  
 ۵۰۵  
 ۵۰۶  
 ۵۰۷  
 ۵۰۸  
 ۵۰۹  
 ۵۱۰  
 ۵۱۱  
 ۵۱۲  
 ۵۱۳  
 ۵۱۴  
 ۵۱۵  
 ۵۱۶  
 ۵۱۷  
 ۵۱۸  
 ۵۱۹  
 ۵۲۰  
 ۵۲۱  
 ۵۲۲  
 ۵۲۳  
 ۵۲۴  
 ۵۲۵  
 ۵۲۶  
 ۵۲۷  
 ۵۲۸  
 ۵۲۹  
 ۵۳۰  
 ۵۳۱  
 ۵۳۲  
 ۵۳۳  
 ۵۳۴  
 ۵۳۵  
 ۵۳۶  
 ۵۳۷  
 ۵۳۸  
 ۵۳۹  
 ۵۴۰  
 ۵۴۱  
 ۵۴۲  
 ۵۴۳  
 ۵۴۴  
 ۵۴۵  
 ۵۴۶  
 ۵۴۷  
 ۵۴۸  
 ۵۴۹  
 ۵۵۰  
 ۵۵۱  
 ۵۵۲  
 ۵۵۳  
 ۵۵۴  
 ۵۵۵  
 ۵۵۶  
 ۵۵۷  
 ۵۵۸  
 ۵۵۹  
 ۵۶۰  
 ۵۶۱  
 ۵۶۲  
 ۵۶۳  
 ۵۶۴  
 ۵۶۵  
 ۵۶۶  
 ۵۶۷  
 ۵۶۸  
 ۵۶۹  
 ۵۷۰  
 ۵۷۱  
 ۵۷۲  
 ۵۷۳  
 ۵۷۴  
 ۵۷۵  
 ۵۷۶  
 ۵۷۷  
 ۵۷۸  
 ۵۷۹  
 ۵۸۰  
 ۵۸۱  
 ۵۸۲  
 ۵۸۳  
 ۵۸۴  
 ۵۸۵  
 ۵۸۶  
 ۵۸۷  
 ۵۸۸  
 ۵۸۹  
 ۵۹۰  
 ۵۹۱  
 ۵۹۲  
 ۵۹۳  
 ۵۹۴  
 ۵۹۵  
 ۵۹۶  
 ۵۹۷  
 ۵۹۸  
 ۵۹۹  
 ۶۰۰  
 ۶۰۱  
 ۶۰۲  
 ۶۰۳  
 ۶۰۴  
 ۶۰۵  
 ۶۰۶  
 ۶۰۷  
 ۶۰۸  
 ۶۰۹  
 ۶۱۰  
 ۶۱۱  
 ۶۱۲  
 ۶۱۳  
 ۶۱۴  
 ۶۱۵  
 ۶۱۶  
 ۶۱۷  
 ۶۱۸  
 ۶۱۹  
 ۶۲۰  
 ۶۲۱  
 ۶۲۲  
 ۶۲۳  
 ۶۲۴  
 ۶۲۵  
 ۶۲۶  
 ۶۲۷  
 ۶۲۸  
 ۶۲۹  
 ۶۳۰  
 ۶۳۱  
 ۶۳۲  
 ۶۳۳  
 ۶۳۴  
 ۶۳۵  
 ۶۳۶  
 ۶۳۷  
 ۶۳۸  
 ۶۳۹  
 ۶۴۰  
 ۶۴۱  
 ۶۴۲  
 ۶۴۳  
 ۶۴۴  
 ۶۴۵  
 ۶۴۶  
 ۶۴۷  
 ۶۴۸  
 ۶۴۹  
 ۶۵۰  
 ۶۵۱  
 ۶۵۲  
 ۶۵۳  
 ۶۵۴  
 ۶۵۵  
 ۶۵۶  
 ۶۵۷  
 ۶۵۸  
 ۶۵۹  
 ۶۶۰  
 ۶۶۱  
 ۶۶۲  
 ۶۶۳  
 ۶۶۴  
 ۶۶۵  
 ۶۶۶  
 ۶۶۷  
 ۶۶۸  
 ۶۶۹  
 ۶۷۰  
 ۶۷۱  
 ۶۷۲  
 ۶۷۳  
 ۶۷۴  
 ۶۷۵  
 ۶۷۶  
 ۶۷۷  
 ۶۷۸  
 ۶۷۹  
 ۶۸۰  
 ۶۸۱  
 ۶۸۲  
 ۶۸۳  
 ۶۸۴  
 ۶۸۵  
 ۶۸۶  
 ۶۸۷  
 ۶۸۸  
 ۶۸۹  
 ۶۹۰  
 ۶۹۱  
 ۶۹۲  
 ۶۹۳  
 ۶۹۴  
 ۶۹۵  
 ۶۹۶  
 ۶۹۷  
 ۶۹۸  
 ۶۹۹  
 ۷۰۰  
 ۷۰۱  
 ۷۰۲  
 ۷۰۳  
 ۷۰۴  
 ۷۰۵  
 ۷۰۶  
 ۷۰۷  
 ۷۰۸  
 ۷۰۹  
 ۷۱۰  
 ۷۱۱  
 ۷۱۲  
 ۷۱۳  
 ۷۱۴  
 ۷۱۵  
 ۷۱۶  
 ۷۱۷  
 ۷۱۸  
 ۷۱۹  
 ۷۲۰  
 ۷۲۱  
 ۷۲۲  
 ۷۲۳  
 ۷۲۴  
 ۷۲۵  
 ۷۲۶  
 ۷۲۷  
 ۷۲۸  
 ۷۲۹  
 ۷۳۰  
 ۷۳۱  
 ۷۳۲  
 ۷۳۳  
 ۷۳۴  
 ۷۳۵  
 ۷۳۶  
 ۷۳۷  
 ۷۳۸  
 ۷۳۹  
 ۷۴۰  
 ۷۴۱  
 ۷۴۲  
 ۷۴۳  
 ۷۴۴  
 ۷۴۵  
 ۷۴۶  
 ۷۴۷  
 ۷۴۸  
 ۷۴۹  
 ۷۵۰  
 ۷۵۱  
 ۷۵۲  
 ۷۵۳  
 ۷۵۴  
 ۷۵۵  
 ۷۵۶  
 ۷۵۷  
 ۷۵۸  
 ۷۵۹  
 ۷۶۰  
 ۷۶۱  
 ۷۶۲  
 ۷۶۳  
 ۷۶۴  
 ۷۶۵  
 ۷۶۶  
 ۷۶۷  
 ۷۶۸  
 ۷۶۹  
 ۷۷۰  
 ۷۷۱  
 ۷۷۲  
 ۷۷۳  
 ۷۷۴  
 ۷۷۵  
 ۷۷۶  
 ۷۷۷  
 ۷۷۸  
 ۷۷۹  
 ۷۸۰  
 ۷۸۱  
 ۷۸۲  
 ۷۸۳  
 ۷۸۴  
 ۷۸۵  
 ۷۸۶  
 ۷۸۷  
 ۷۸۸  
 ۷۸۹  
 ۷۹۰  
 ۷۹۱  
 ۷۹۲  
 ۷۹۳  
 ۷۹۴  
 ۷۹۵  
 ۷۹۶  
 ۷۹۷  
 ۷۹۸  
 ۷۹۹  
 ۸۰۰  
 ۸۰۱  
 ۸۰۲  
 ۸۰۳  
 ۸۰۴  
 ۸۰۵  
 ۸۰۶  
 ۸۰۷  
 ۸۰۸  
 ۸۰۹  
 ۸۱۰  
 ۸۱۱  
 ۸۱۲  
 ۸۱۳  
 ۸۱۴  
 ۸۱۵  
 ۸۱۶  
 ۸۱۷  
 ۸۱۸  
 ۸۱۹  
 ۸۲۰  
 ۸۲۱  
 ۸۲۲  
 ۸۲۳  
 ۸۲۴  
 ۸۲۵  
 ۸۲۶  
 ۸۲۷  
 ۸۲۸  
 ۸۲۹  
 ۸۳۰  
 ۸۳۱  
 ۸۳۲  
 ۸۳۳  
 ۸۳۴  
 ۸۳۵  
 ۸۳۶  
 ۸۳۷  
 ۸۳۸  
 ۸۳۹  
 ۸۴۰  
 ۸۴۱  
 ۸۴۲  
 ۸۴۳  
 ۸۴۴  
 ۸۴۵  
 ۸۴۶  
 ۸۴۷  
 ۸۴۸  
 ۸۴۹  
 ۸۵۰  
 ۸۵۱  
 ۸۵۲  
 ۸۵۳  
 ۸۵۴  
 ۸۵۵  
 ۸۵۶  
 ۸۵۷  
 ۸۵۸  
 ۸۵۹  
 ۸۶۰  
 ۸۶۱  
 ۸۶۲  
 ۸۶۳  
 ۸۶۴  
 ۸۶۵  
 ۸۶۶  
 ۸۶۷  
 ۸۶۸  
 ۸۶۹  
 ۸۷۰  
 ۸۷۱  
 ۸۷۲  
 ۸۷۳  
 ۸۷۴  
 ۸۷۵  
 ۸۷۶  
 ۸۷۷  
 ۸۷۸  
 ۸۷۹  
 ۸۸۰  
 ۸۸۱  
 ۸۸۲  
 ۸۸۳  
 ۸۸۴  
 ۸۸۵  
 ۸۸۶  
 ۸۸۷  
 ۸۸۸  
 ۸۸۹  
 ۸۹۰  
 ۸۹۱  
 ۸۹۲  
 ۸۹۳  
 ۸۹۴  
 ۸۹۵  
 ۸۹۶  
 ۸۹۷  
 ۸۹۸  
 ۸۹۹  
 ۹۰۰  
 ۹۰۱  
 ۹۰۲  
 ۹۰۳  
 ۹۰۴  
 ۹۰۵  
 ۹۰۶  
 ۹۰۷  
 ۹۰۸  
 ۹۰۹  
 ۹۱۰  
 ۹۱۱  
 ۹۱۲  
 ۹۱۳  
 ۹۱۴  
 ۹۱۵  
 ۹۱۶  
 ۹۱۷  
 ۹۱۸  
 ۹۱۹  
 ۹۲۰  
 ۹۲۱  
 ۹۲۲  
 ۹۲۳  
 ۹۲۴  
 ۹۲۵  
 ۹۲۶  
 ۹۲۷  
 ۹۲۸  
 ۹۲۹  
 ۹۳۰  
 ۹۳۱  
 ۹۳۲  
 ۹۳۳  
 ۹۳۴  
 ۹۳۵  
 ۹۳۶  
 ۹۳۷  
 ۹۳۸  
 ۹۳۹  
 ۹۴۰  
 ۹۴۱  
 ۹۴۲  
 ۹۴۳  
 ۹۴۴  
 ۹۴۵  
 ۹۴۶  
 ۹۴۷  
 ۹۴۸  
 ۹۴۹  
 ۹۵۰  
 ۹۵۱  
 ۹۵۲  
 ۹۵۳  
 ۹۵۴  
 ۹۵۵  
 ۹۵۶  
 ۹۵۷  
 ۹۵۸  
 ۹۵۹  
 ۹۶۰  
 ۹۶۱  
 ۹۶۲  
 ۹۶۳  
 ۹۶۴  
 ۹۶۵  
 ۹۶۶  
 ۹۶۷  
 ۹۶۸  
 ۹۶۹  
 ۹۷۰  
 ۹۷۱  
 ۹۷۲  
 ۹۷۳  
 ۹۷۴  
 ۹۷۵  
 ۹۷۶  
 ۹۷۷  
 ۹۷۸  
 ۹۷۹  
 ۹۸۰  
 ۹۸۱  
 ۹۸۲  
 ۹۸۳  
 ۹۸۴  
 ۹۸۵  
 ۹۸۶  
 ۹۸۷  
 ۹۸۸  
 ۹۸۹  
 ۹۹۰  
 ۹۹۱  
 ۹۹۲  
 ۹۹۳  
 ۹۹۴  
 ۹۹۵  
 ۹۹۶  
 ۹۹۷  
 ۹۹۸  
 ۹۹۹  
 ۱۰۰۰

मुहद्दिसे आ'ज़म मौलाना सरदार अहमद चिश्ती क़ादिरि رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ فَرَمَاتे हैं :

“कुरआनो हदीस और कुतुबे दीनी के बारे में येह नहीं कहना चाहिये कि वहां पड़ी हैं  
 बल्कि यूं कहना चाहिये कि वहां रखी हैं।” (फैज़ाने मुहद्दिसे आ'ज़म, स. 45)



मुहद्दिसे आ'ज़म हज़रत मौलाना मुहम्मद सरदार अहमद चिश्ती क़ादिरि رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ 29 जुमादल उख़्रा 1321 हि. ब मुताबिक़ 22 सितम्बर 1903 ई. में पैदा हुए। कमो बेश 30 साल दर्सो तदरीस का सिल्लिसला फ़रमाते हुए शा'बान शरीफ़ की पहली तारीख़ 1382 हि. ब मुताबिक़ 29 दिसम्बर 1962 ई. जुमुआ और हफ़ता की दरमियानी रात एक बज कर चालीस मिनट पर इस अन्दाज़ से दुन्या से रुख़सत हुए कि हर सांस के साथ “الله هو، الله هو” की आवाज़ें आ रही थीं।

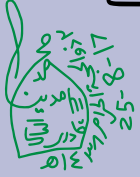
اٰمِيْنُ بِجَاوِحَاتِمِ النَّبِيِّنَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ | अल्लाह पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो।



الله

## جانوروں پر जुल्म

”جانوروں پر ظلم کرنا مسلمانوں پر ظلم کرنے سے بھی سخت ہے۔“



मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ فرमाते हैं :

जानवरों पर जुल्म करना मुसल्मानों पर जुल्म करने से भी सख़्त है ।

(मिरआतुल मनाजीह, 8/86 मुलख़ब़सन)

(मुसल्मान हाथ से भी जुल्म का बदला ले सकता है, केस भी कर सकता है मगर

मज़्लूम जानवर किस से फ़रियाद करे ?)



हज़रते अल्लामा मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ 4 जुमादल ऊला 1314 हि. ब मुताबिक़ पहली मार्च 1894 ई. को सुब्हे सादिक़ के बा बरकत वक़्त में पैदा हुए । 3 रमज़ानुल मुबारक 1391 हि. ब मुताबिक़ 24 अक्टूबर 1971 ई. को इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा, बा'दे विसाल आप का चेहरए मुबारका फूल की तरह खिला हुवा था और येह तसव्वुर करना मुशिकल था कि आप फ़ौत हो चुके हैं, आप की आखिरी आरामगाह गुजरात में है ।

اللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي سَلَمَةَ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي هٰشِمٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي عَلِيٍّ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي طَالِبٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي مُوْسٰى وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي جَعْفَرٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي مَحْمُوْدٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي هٰشِمٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي عَلِيٍّ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي طَالِبٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي مُوْسٰى وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي جَعْفَرٍ وَارْحَمْ عَلٰى اٰلِ اَبِي مَحْمُوْدٍ



### किताब कब फ़ाएदा देगी ?

فرمانِ حافظِ صلَّیَ اللهُ عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ: (دینی) کتاب (ہاتھ میں لٹکا کر چلنے کے بجائے)  
 جب سینے سے لگائی جائیگی تو سینے میں اترے گی اور جب کتاب کو  
 سینے سے دُور رکھا جائے گا تو کتاب بھی سینے سے دور ہوگی۔



فرमाने हाफ़िज़े मिल्लत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ (दीनी) किताब (हाथ में लटका कर चलने के  
 बजाए) जब सीने से लगाई जाएगी तो सीने में उतरेगी और जब किताब को सीने  
 से दूर रखा जाएगा तो किताब भी सीने से दूर होगी । (शाने हाफ़िज़े मिल्लत, स. 6)

हाफ़िज़े मिल्लत हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिस मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ 1312 हि. ब मुताबिक 1894 ई. यूपी हिन्द में बरोज़ पीर सुब्द के वक्त पैदा हुए, हिफ़्जे कुरआन इस क़दर मज़बूत था कि आप “बड़े हाफ़िज़ जी” के लक़ब से मशहूर थे। अपने हर अमल में सुन्नत का बहुत ज़ियादा ख़याल रखते थे। जुमादल उख़्रा की पहली तारीख 1396 हि. ब मुताबिक 31 मई 1976 ई. रात ग्यारह बज कर पचपन मिनट पर इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा, आप का मज़ार शरीफ़ अल जामिअतुल अशरफ़िय्या मुबारक पूर में है। **अल्लाह** पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़िफ़रत हो। **اصْبِرْنَ يَا حَاجَاتِمُ السَّعِيَّةِينَ عَلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ وَابْتِهَمُوا**



الله

دौलत की मस्ती

فرمانِ قطبِ مدینہ علیہ

”دولت کی مستی سے خدایک کی پناہ مانگو“



اس سے بہت دیر میں ہوش آتا ہے۔“

فرمانے کولبے مدینا رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ :

”دौलत की मस्ती से खुदा पाक की पनाह मांगो, इस से बहुत देर में होश आता है।“

(सख्खिदी कुलबे मदीना, स. 18)

कब्रे मुबारक  
सख्खिदी कुलबे मदीना जि़याउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ

सख्खिदी कुलबे मदीना जि़याउद्दीन अहमद मदनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ 294 हि. मुताबिक 1877 ई. में पैदा हुए। आप मुसलमानों के पहले खलीफ़ा हज़रत सिद्दीके अक्बर رَضِيَ اللهُ عَنْهُ की औलाद में से हैं। 4 जुल हज शरीफ 1401 हि. (2-10-1981) बरोज़ जुमुआ मस्जिदे नबवी शरीफ के मुअज़्ज़िन ने “اللهُ أَكْبَرُ، اللهُ أَكْبَرُ” कहा और सख्खिदी कुलबे मदीना رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने कलिमा शरीफ पढ़ा और इन्तिकाल फ़रमा गए। जन्नतुल बक़ीअ में हज़रते बीबी फ़ातिमतुज़्ज़हरा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا के मज़ारे पुर अन्वार से सिर्फ़ दो गज़ के फ़ासिले पर दफ़न हुए। **अल्लाह** पाक की उन पर रहमत और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़ि़रत हो। **اصْبِرْ يَا جَلِيلُ حَاتِمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**

اللّٰه

سुन्नत की पैरवी

ایک بزرگ کا عقول

میرے نزدیک سنت کی پیروی  
ہزار سال کی (نفل) عبادت سے بہتر ہے



एक बुज़ुर्ग का क़ौल

मेरे नज़्दीक सुन्नत की पैरवी हज़ार साल की (नफ़ल) इबादत से बेहतर है ।

(फ़ैज़ाने रमज़ान, स. 106)

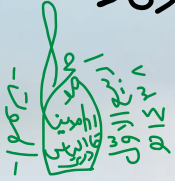




اللہ

مرते वक्त कलिमा नसीब न हो

صَنَائِحِ كِرَامٍ رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمُ فَرَمَاتے ہیں: "جو شخصِ مِسْوَاكِ كَا  
عَادِي ہو مرتے وقت اُسے کلمہ پڑھنا نصیب ہوگا اور جو  
اَضْيُون کھاتا ہو مرتے وقت اُسے کلمہ نصیب نہ ہوگا۔"



صلو علی الحبيب صلی اللہ تعالیٰ علی محمد

मशाइखे किराम رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمُ फَرَمَاتے हैं : "जो शख्स मिसवाक का आदी हो, मरते  
वक्त उसे कलिमा पढ़ना नसीब होगा और जो अफ़यून खाता हो, मरते वक्त उसे  
कलिमा नसीब न होगा।"

(बहारे शरीअत, 1/288)





## अगले हफ्ते का रिसाला



**Delhi** : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, **Mumbai** : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi  
Delhi-110006 ☎ +91-8178862570 Post Office, Mumbai-400003 ☎ +91-9320558372

**Ahmedabad** : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, **Nagpur** : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar  
Mirzapur, Ahmedabad-380001 ☎ +91-9327168200 Road, Mominpura, Nagpur-440018 ☎ +91-9326310099

🌐 [www.maktabatulmadina.in](http://www.maktabatulmadina.in) ✉ [feedbackmmhind@gmail.com](mailto:feedbackmmhind@gmail.com)

📦 For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) ☎ +91-9978626025